डॉ॰ पी॰एस्॰ पाटील,
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर-४१६ ००४॰

- संस्तुति -

मैं संस्तुति करता हूँ कि, श्री भारत साहेबराव कुवेकर का "धर्मवीर भारती के 'गुनाहों का देवता' उपन्यास का तात्विक विवेचन" लघु-शोध-प्रबन्ध परीक्षणार्थ अग्रेषित किया जाए।

कोल्हापुर।
तिथि : 10 OCT 1995
10 OCT 1995

अध्यक्ष
हिन्दी बिभाग,
शिवाजी बिश्वबिद्यालय,
कोल्हापुर - ४१६००४

०००००

प्रा. डा कृष्णकांत पाटील
शिवराज महाविद्यालय, गडहिंग्लज,
जि. कोल्हापुर

प्र मा ण प त्र

मै प्रमाणित करता हूँ कि, **श्री. भारत साहेबराव कुचेकर** ने मेरे निर्देशन में " डा. धर्मवीर भारती के ' गुनाहों का देवता ' उपन्यास का तात्विक विवेचन " लघुशोध प्रबन्ध, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम.फिल. (हिन्दी) उपाधि के लिए लिखा है । यह कार्य पूर्व योजनानुसार सम्पन्न हुआ है और इसमें शोधछात्र ने मेरे सुझावो का पूर्णत. पालन किया है । जो तथ्य लघु शोध-प्रबन्ध में प्रस्तुत किए हैं, मेरे जानकारी के अनुसार सही है । शोध छात्र के कार्य से मैं पूर्णतः संतुष्ट हूँ ।

शोधनिर्देशक

(प्रा. डा. कृष्णकांत पाटील)

गडहिंग्लज ।

तिथि - 10 OCT 1995

प्र ख्या प न

" डा. धर्मवीर भारती के ' गुनाहों का देवता ' उपन्यास का तात्विक विवेचन " लघुशोध-प्रबन्ध मेरी मौलिक रचना है जो एम.फिल. (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है । यह रचना इससे पहले शिवाजी विश्वविद्यालय या अन्य किसी विश्वविद्यालय की उपाधि के लिए प्रस्तुत नही की गई है ।

शोध-छात्र

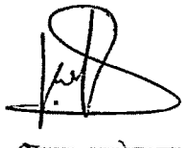

कोल्हापुर ।

(श्री भारत साहेबराव कुचेकर)

दिनांक- 10 OCT 1995

:- प्राक्कथन :-

प्राक्कथन

डा.धर्मवीर भारती जी को हिन्दी साहित्य जगत में कौन नहीं जानता ? साहित्य निर्मिती के साथ कई सालों तक उन्होंने 'धर्मयुग' पत्रिका का संपादन कार्य भी किया। 'धर्मयुग' का मैं अपने कॉलेज जीवन से चहेता रहा हूँ। अपने विश्वविद्यालयीन जीवन में मैंने भारती जी की कई कृतियाँ पढ़ी जिसमें से 'गुनाहों का देवता' इस उपन्यास ने मुझे इतना आकृष्ट किया कि, मैंने उसी वक्त तय कर लिया कि, मैं अपना शोध कार्य इसी कृति पर करूँगा।

एम्.फिल में आने के पश्चात् मुझे ऐसा सुअवसर प्राप्त हुआ तो मैंने अपने निर्देशक प्रा.डा.कृष्णकान्त पाटील जी से इस संदर्भ में पूछा कि,क्या मैं इस पर कुछ कार्य कर सकता हूँ ? तो उन्होंने सहर्ष स्वीकृति दे दी।

सबसे पहले मेरे सामने यह सवाल खड़ा हो गया कि,क्या अब तक अन्य किसी विद्वान ने इसपर कार्य किया है ? इसकी खोज करते हुए मुझे मालूम हुआ कि, शिवाजी विश्वविद्यालय में डा.धर्मवीर भारती जी की सभी कृतियों पर डा.पुष्पा वास्कर जी का पी.एच्डी शोध प्रबन्ध - "धर्मवीर भारती : व्यक्तित्व और कृतित्व" हो चुका है। लेकिन उनके किसी एक औपन्यासिक कृतिपर कोई भी शोध प्रबन्ध या लघु शोध प्रबन्ध नहीं लिखा गया है। इसलिए मैंने "धर्मवीर भारती के 'गुनाहों का देवता' उपन्यास का तात्विक विवेचन" इस विषय पर अपना लघु शोध-प्रबन्ध लिखना शुरु किया। तब मेरे सामने निम्नलिखित सवाल खड़े हो गये --

१) डा.धर्मवीर भारती जी के कृतित्व पर उनके व्यक्तित्व का प्रभाव किस तरह पड़ा है ?

२) 'गुनाहों का देवता' का कथानक क्या है ?

३) उपन्यास के पात्रों के चरित्र-चित्रण में भारती जी कहाँ तक सफल हुए है ?

४) इस उपन्यास में किस स्थान ,समय तथा परिस्थितियों का चित्रण किया गया है।

५) उपन्यास के संवाद तथा भाषा शैली में लेखक की प्रतिभा कहाँ तक दिखाई देती है ।

६) उपन्यास लिखने के पीछे लेखक का उद्देश्य क्या है ?

इस सभी सवालों के जवाब प्राप्त करने का प्रयास मैंने अपने लघुशोध-प्रबन्ध में किया है और अंत में उपसंहार के रूप में दे दिया है ।

अध्ययन की सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने लघुशोध प्रबन्ध को निम्नलिखित अध्यायों में विभाजित किया है --

(१) प्रथम अध्याय -- "धर्मवीर भारती : व्यक्तित्व एवं कृतित्व"

इस अध्याय में मैंने उनके जीवन परिचय के साथ-साथ उनकी अलग-अलग विधाओं में लिखी रचनाओं को विभाजित करके प्रस्तुत किया है । साथ ही मैंने उनके व्यक्तित्व के कुछ अंशो को भी पेश करते हुए उन्हें प्राप्त सम्मानों की जानकारी दी है ।

(२) द्वितीय अध्याय -"'गुनाहों का देवता' : कथावस्तु ।"

इस उपन्यास की कथावस्तु तीन खण्डो में विभाजित है । इसमें मुख्य पात्रों से सम्बध्द कथा के साथ अन्य छह सम्बद्ध कथाएँ हैं जिनका मैंने अपने लघुशोध प्रबन्ध में संक्षेप में समावेश किया है । साथ ही समीक्षा करते हुए निष्कर्ष प्रस्तुत किया है ।

(३) तृतीय अध्याय -"'गुनाहों का देवता' : पात्र एवं चरित्र-चित्रण ।"

इस अध्याय में मैंने पात्रों को स्वरुप के आधार पर, महत्व के आधारपर विभाजित करते हुए उनके चारित्रिक विशेषताओं को प्रस्तुत किया है ।

(४) चतुर्थ अध्याय -"'गुनाहों का देवता' : देश-काल तथा वातावरण ।"

इस अध्याय में मैंने देश-काल तथा वातावरण का स्वरुप, उसके गुण और भेद बताते हुए 'गुनाहों का देवता' में भारती जी देश-काल तथा वातावरण चित्रण में कहाँ तक सफ़ल हुए है इसे खोजने का प्रयास किया है ।

(५) पँचम अध्याय - "'गुनाहों का देवता' : संवाद तथा भाषा शैली ।"

इस अध्याय में मैंने संवाद की परिभाषा, उसका उद्देश्य तथा उसके गुणों की चर्चा करते हुए उसके अनुसार 'गुनाहों का देवता' की समीक्षा की है । साथ ही भाषा के रूप तथा शैली के प्रकारों की चर्चा करते हुए उपन्यास की समीक्षा की है और अंत में निष्कर्ष दे दिया है ।

(६) षाष्ठ अध्याय -"'गुनाहों का देवता' : उद्देश्य ।"

इस अध्याय में मैंने उपन्यास लिखने के पीछे भारती जी का कौन-सा उद्देश्य था इसे ढूँढने का प्रयास किया है जिसमें मैंने कई उद्देश्यों को पाया लेकिन मैंने अध्याय के अंत में निष्कर्ष रूप में उन सभी उद्देश्यों में से प्रमुख उद्देश्य की चर्चा की है ।

उपसंहार - सभी अध्यायों के अंत में मैंने उपसंहार के रूप में अपना निष्कर्ष प्रस्तुत किया है जो उपन्यास के पूरे अध्ययन का सार है । और अंत में मैंने 'संदर्भ ग्रंथ सूची' दे दी है ।

मेरी इस लघुशोध-प्रबन्ध की मौलिकताएँ निम्नलिखित है --

१) संपूर्ण विवेचन उपलब्ध सामग्री तथा प्रत्यक्ष अध्ययन पर आधारित है ।

२) चरित्रों को व्यावहारिक दृष्टि से सामाजिक परिप्रेक्ष में परखने की कोशिश की है ।

३) भाषा का इतना सुक्ष्म अध्ययन किया है कि हर शब्द की जाति एवं प्रकार का उल्लेख किया है ।

४) अध्ययन के बल पर लेखक के व्यक्ति एवं साहित्यकार के रूपों की परस्पर

तुलना कर समग्र व्यक्तित्व को उभारने की चेष्टा की है ।

डा.धर्मवीर भारती जी के जीवन परिचय की जानकारी प्राप्त करने के लिए मुझे बहुत तकलीफ़ उठानी पड़ी । इस संदर्भ में मैंने स्वयं भारती जी से भी मिलने की कोशिश की परंतु उनके प्रकृति अस्वास्थ्य के कारण उनसे मुलाकात नहीं हो पायी । यह लघुशोध प्रबन्ध लिखते समय सबसे पहले कठिनाई संदर्भ ग्रंथों के उपलब्धि की थी । फिर भी सुनियोजित ढ़ंग से इस प्रबंध को पूरा करने का प्रामाणिक प्रयास किया गया है ।

ऋणनिर्देश -

इस लघुशोध प्रबन्ध की पूर्ति में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में जिन्होंने मेरी मदद की है उन सभी को धन्यवाद देना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ ।

सबसे पहले तो मैं अपने गुरूवर्य ,शोधनिर्देशक प्रा.डा.कृष्णकांत पाटील जी के प्रति आभार प्रकट करना चाहुँगा । उन्होंने मुझे जो अनमोल मार्गदर्शन किया है उससे मैं ऊऋण नहीं हो सकता । उन्होंने मेरे लघुशोध प्रबन्ध की त्रुटियों को शीघ्रता से दूर कर दिया इसी वजह से मेरा लघुशोध प्रबन्ध इतने कम समय में पूरा हो सका है ।

मेरा कोई भी कार्य मेरे माता-पिता के आशिर्वाद के बिना पूरा नहीं होता । उनके आशिर्वाद से ही आज मैंने अपना कार्य सफलता पूर्वक पूरा किया है ।

इसके साथ ही मेरे अन्य गुरूवर्य डा.पी.एस.पाटील (विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग,शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर) डॉ.अर्जुन चव्हाण (अधिव्याख्याता,हिन्दी विभाग,शिवाजी विश्वविद्यालय,कोल्हापुर) डा.बी.बी. पाटील, प्रा.सौ.एम.एस.जाधव इनका मार्गदर्शन भी मुझे मिला ।

मेरे मित्र परिवार में प्रा.सुनिल बनसोडे,श्री.अरूण गंभिरे,श्री.चतुर्भूज गिड्डे, कु.सुजाता किल्लेदार, कु.अपर्णा पाध्ये,कु.गीता भोसले,कु.श्यामला कोळेकर, आदि ने भी मेरी सहायता की ।

संदर्भ ग्रन्थों के बिना तो कोई भी लघुशोध-प्रबन्ध पूरा नहीं होता। मैं शिवाजी विश्वविद्यालय के ग्रंथपाल समेत सभी कर्मचारी वर्ग, शिवराज महाविद्यालय, गडहिंग्लज के ग्रंथपाल, जयसिंगपुर महाविद्यालय, जयसिंगपुर के ग्रंथपाल और स्वामी विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापुर के ग्रंथपाल को धन्यवाद अर्पित करता हूँ जिनके सहकार्य के बिना यह लघुशोध-प्रबन्ध पूरा न हो पाता।

साथ ही मैं टंकलेखक श्री बाळकृष्ण रा. सावंत (कोल्हापुर) का भी आभारी हूँ।

अंत मे मैं इन सभी के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हुए मेरा लघुशोध-प्रबन्ध परीक्षणार्थ प्रस्तुत करता हूँ।

शोधछात्र

(श्री. भारत साहेबराव कुचेकर)

कोल्हापुर।

दिनांक 10 OCT 1995।

अनुक्रमणिका

प्रथम अध्याय - "धर्मवीर भारती : व्यक्तित्व एवं कृतित्व"। एवं

१.१ जीवन परिचय।

जन्म एवं वंश / बचपन एवं शिक्षा / आजीविका / पारिवारिक जीवन / व्यक्तित्व / देशान्तर - परिभ्रमण / प्राप्त सम्मान। एवं

१.२ कृतित्व। एवं

१.२.१ कवि भारती।

- दूसरा सप्तक / ठण्डा लोहा / सात वर्षा गीत / कनुप्रिया / सपना अभी भी।

१.२.२ नाटककार भारती।

अंधायुग।

१.२.३ एकांकीकार भारती।

नदी प्यासी थी।

१.२.४ कहानीकार भारती।

चांद और टूटे हुए लोग / बंद गली का आखिरी मकान।

१.२.५ उपन्यासकार भारती।

गुनाहों का देवता / सूरज का सातवाँ घोड़ा / ग्यारह सपनों का देश।

१.२.६ निबन्धकार भारती।

ठेले पर हिमालय / पश्यन्ती / कहनी - अनकहनी।

१.२.७ डा.भारती द्वारा अनुदित कृतियाँ। एवा

आस्कर वाइल्ड की कहानियाँ / देशान्तर।

१.२.८ शोधकर्ता भारती। एवा

सिद्ध साहित्य।

अंक १ मानक होने चाहिए।

१.२.९ - समीक्षक भारती ।
प्रगतिवाद : एक समीक्षा/ मानवमूल्य और साहित्य ।

१.२.१० पत्रकार भारती ।
संगम (पत्रिका)/ निकष (पत्रिका)/आलोचना(पत्रिका)/
धर्मयुग (पत्रिका)/ हिंदी साहित्य कोश (ग्रन्थ)/
अर्पित मेरी भावना (अभिनंदन ग्रन्थ) ।

- निष्कर्ष ।

द्वितीय अध्याय- "'गुनाहों का देवता' उपन्यास की कथावस्तु ।"

तृतीय अध्याय - "'गुनाहों का देवता' उपन्यास में पात्र तथा चरित्र-चित्रण"।

३.१ महत्त्व के आधार पर पात्रों का वर्गीकरण ।
प्रमुख पात्र / सहायक पात्र / गौण पात्र / खलपात्र /
नामनिर्देशित पात्र ।

३.२ स्वरुप के आधार पर पात्रों का वर्गीकरण ।
आदर्शवादी /व्यक्तिवादी/ सामाजिक / प्रतीकात्मक /
मनोविश्लेषणात्मक ।

३.३ चरित्र-चित्रण की विधियाँ ।
विश्लेषणात्मक / आत्मकथात्मक /आत्मविश्लेषणात्मक/
संवादात्मक ।

३.४ चरित्र चित्रण ।

३.४.१ प्रमुख पात्र ।
चन्दर/ सुधा / प्रमिला डिकूज ।

३.४.२ सहायक पात्र ।
बिनती / बर्टी / गेसू / बुआ / डा. शुक्ला ।

३.४.३ गौण पात्र ।
कैलाश मिश्र/ रवीन्द्र बिसरिया ।

३.४.४ नामनिर्देशित पात्र ।
निष्कर्ष ।

चतुर्थ अध्याय - "'गुनाहों का देवता' उपन्यास में देश-काल तथा वातावरण" ।

४.१ देश-काल का स्वरूप ।

४.१.१ देश-काल के गुण ।

वर्णनात्मक सूक्ष्मता / विश्वसनीय कल्पनात्मकता / उपकरणात्मक संतुलन ।

४.२.१ देश-काल के भेद ।

सामाजिक / प्राकृतिक / ऐतिहासिक ।

४.२ 'गुनाहों का देवता' में देश-काल का तात्त्विक विवेचन ।

'गुनाहों का देवता' में राजनीतिक स्थिति / सामाजिक स्थिति / शैक्षिक चित्रण ।

पारिवारिक सम्बन्ध / ग्राम्य संस्कृति / अंध:श्रध्दा / दहेज समस्या / धार्मिक स्थिति / रीतिरिवाज / इलाहाबाद का वर्णन / प्रकृति वर्णन ।

- निष्कर्ष ।

पंचम अध्याय - "'गुनाहों का देवता' उपन्यास में संवाद तथा भाषा-शैली ।"

५.१ कथोपकथन के गुण ।

उपयुक्तता / स्वाभाविकता / संक्षिप्तता / उद्देश्यपूर्णता / सम्बध्दता / पात्रानुकूलता / मनोवैज्ञानिकता / भावात्मकता ।

५.२ भाषा ।

५.२.१ शब्दप्रयोग के रूप ।

तत्सम शब्द / तद्भव शब्द / अंग्रेजी शब्द / अरबी शब्द / फारसी शब्द / उर्दू शब्द / विदेशज शब्द / निरर्थक शब्द / अपशब्द ।

५.२.२ भाषा के रूप ।

वर्णनात्मक भाषा / उपदेशात्मक भाषा / व्यंग्यात्मक

भाषा / पात्रानुकूल भाषा / आवेशात्मक भाषा/
गंभीरता से युक्त भाषा / भावुक भाषा / प्रतिकात्मक
भाषा / ग्राम्य भाषा ।

५.२.३ भाषा सौन्दर्य के साधन ।
विशेषाण / रूपक / उपमान / कहावतें और मुहावरें/
सूक्तियाँ ।

५.३ - शैली ।
वर्णनात्मक शैली / विवरणात्मक या विश्लेषणात्मक
शैली / पत्रात्मक शैली / नाटकीय शैली / काव्यात्मक
या भावात्मक शैली / आँचलिक शैली/
मनोविश्लेषणात्मक शैली / चेतना प्रवाह शैली ।

- निष्कर्ष ।

षष्ठ अध्याय - "'गुनाहों का देवता' उपन्यास का उद्देश्य" ।

६.१ स्त्री पुरुष के अंतर्बाह्य सम्बन्धों को परखना ।

६.२ प्रेम के विविध रूपों का चित्रण करना ।
भावुक प्रेम / वासनाजन्य प्रेम / पागलता से युक्त प्रेम/
निरुद्देश्य प्रेम / नि:स्वार्थ प्रेम / आदर्श एवं त्यागपूर्ण
प्रेम ।

६.३ मध्यवर्गीय जीवन वृत्ति का द्योतन करना ।

६.४ रूढ़ी-परम्पराओं की व्यर्थता दिखाना ।

६.५ नारी शिक्षा की स्थिति को दर्शाना ।

६.६ नैतिक आदर्श की रक्षा करना ।

६.७ नारी के अंतरंग का चित्रण करना ।

६.८ मानवी मूल्यों का विघटन दिखाना ।

६.९ समाज की समस्याओं का चित्रण करना ।

निष्कर्ष ।

उपसंहार ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची -
रचनात्मक ग्रंथ । समीक्षात्मक ग्रंथ शोध-प्रबन्ध पत्रिकाएँ ।